आध्यात्मिक भजन संग्रह

सम्पादक
डॉ. वीरसागर जैन

प्रकाशक
कुन्दकुन्द भारती
18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067

bhajan book.pmd 1 4/29/2009, 8:40 PM

कुन्दकुन्द भारती न्यास का उनतालीसवाँ पुष्प :

आध्यात्मिक-भजन संग्रह

सम्पादन : डॉ. वीरसागर जैन

प्रकाशक : कुन्दकुन्द भारती न्यास, नई दिल्ली-110067

मुद्रक : ऑस्क एडवर्टाईजिंग, ओखला इण्डिस्ट्रल एरिया, फेज़-I, नई दिल्ली-110020

संस्करण : प्रथम, महावीर जयन्ती 2009 ई., वी.नि.सं. 2535, प्रतियाँ 1000

मूल्य : पाँच रुपये

© प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति-स्थल

कुन्दकुन्द भारती न्यास
18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली-110067
दूरभाष : 011-26564510, 26513138

ADHYATMIK BHAJAN SAMGRAH

Edited by : Dr. Veer Sagar Jain

Publisher : Kund Kund Bharti Trust, 18-B, Special Institutional Area, New Delhi-110067 (India)

Edition : 1st, Mahavir Jayanti, 1000 Copies

भूमिका

संगीत का मनुष्य के जीवन में अद्‌भुत महत्त्व है। मनुष्य के ही नहीं, पशु-पक्षियों के जीवन में भी, यहाँ तक कि पेड़-पौधों के जीवन में भी संगीत का आश्चर्यजनक महत्त्व बताया गया है। प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनियों ने ही नहीं, आज तो विज्ञान (Science) ने भी अनेकानेक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि संगीत का सभी प्राणियों पर अद्‌भुत प्रभाव पड़ता है। मेरे पास अनेक समाचार-पत्रों की ऐसी कतरनें सुरक्षित हैं जिनमें संगीत पर हुए अनेक वैज्ञानिक प्रयोगों का विवरण प्रकाशित किया गया है। यहाँ सबको अविकल रूप से प्रस्तुत करने का तो अवकाश नहीं है किन्तु उनमें से कुछ का सार-संक्षेप इसप्रकार है–

1. "संगीत केवल मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर में ही ताजगी और स्फूर्ति का संचार नहीं करते, बल्कि पेड़-पौधों और सब्जियों के विकास में भी सहायक होते हैं।... हम प्रतिदिन सुबह-शाम एक पौधे के पास एक घंटे तक वाद्य यंत्र बजाते। सात माह बाद हमने पाया कि जिस पौधे के पास संगीत बजता था वह अन्य पौधों से दुगुना लम्बा हो गया और उसमें सब्जी भी तिगुनी उत्पन्न हुई।"

   –नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 18 अप्रैल 2004

2. "हांगकांग विश्वविद्यालय में 45 छात्रों पर तीन माह तक शोध की गई। निष्कर्ष है कि संगीत हमारा मनोरंजन ही नहीं करता, अपितु हमारी स्मरण-शक्ति भी आश्चर्यजनक रूप से बढ़ाता है।"

   –नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 24 अगस्त 2003

3. "संगीत मेडिटेशन का ही एक रूप है और इसमें डूबकर इंसान सारे स्ट्रैस (तनाव) को भूलकर पूरी तरह रिलैक्स हो सकता है।" –नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 6 अक्तूबर 2007

4. "संगीत के द्वारा अनेक जटिल रोगों की भी चिकित्सा करने में अद्‌भुत सहायता प्राप्त होती है। अतः अमेरिका में तो यह रिवाज बनता जा रहा है कि हर अस्पताल में कम से कम एक म्यूजिक थेरेपिस्ट जरूर हो।"

5. "जर्मनी के फ्रेकफुर्त विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि गीत गाने से मनुष्य की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बहुत बढ़ती है।"

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 20 जनवरी 2004

6. "संगीत सुनने वाले नींद की गोलियाँ खाना छोड़कर भी अच्छी नींद का मजा ले सकते हैं और दर्द-निवारक (Pain-killer) दवाओं के बिना भी दर्द से मुक्ति पा सकते हैं।"

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 2 अक्तूबर 2004

7. "संगीत के द्वारा सिर दर्द, माइग्रेन, तनाव, हार्मोन सिस्टम में बदलाव, मेंटल सेंसरी एबिलिटीज, स्लिप डिस्ऑर्डर, पेन न्यूरोडर्मेटिस व डायबिटीज आदि बीमारियों को भी ठीक किया जा सकता है।"

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 22 अगस्त 2003

8. "क्रोध, भय आदि मानसिक विकार भी संगीत द्वारा आसानी से दूर किये जा सकते हैं।"

9. "महान् वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कहना है कि विश्वशांति के लिए खतरा बन चुके आतंकवाद को रोकने के लिए नृत्य और संगीत जैसी दैवीय कलाओं का इस्तेमाल करना चाहिए।"

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 2 मार्च 2004

इन सबका तात्पर्य यही है कि संगीत एक अद्‌भुत कला है और इसे अपनाकर जीवन के सभी क्षेत्रों में बहुत लाभ उठाया जा सकता है।

इस पर भी यदि यह संगीत आध्यात्मिक हो, आत्मा-परमात्मा में मग्न करने वाला हो तो कहना ही क्या? ऐसे संगीत की तो गणधरादि महामुनि भी प्रशंसा करते हैं। वैसे भी भारत एक अध्यात्मप्रधान देश है, अतः यहाँ वही संगीत प्रशंसनीय माना गया है जो आध्यात्मिक हो। लौकिक या अश्लील कामभाव आदि को उद्दीप्त करनेवाला संगीत यहाँ कथमपि उपादेय नहीं माना गया है, क्योंकि उससे स्वस्थ मनोरंजन भी नहीं हो सकता, अपितु मानसिक रुग्णता ही पैदा होती है। अतः सदैव श्रेष्ठ संगीत का ही आलम्बन लेना चाहिए। श्रेष्ठ संगीत ही हमारे सम्पूर्ण तनाव (Tension) आदि को दूर कर सच्ची सुख-शांति प्रदान कर सकता है।

आधुनिक युग में तनाव (Tension) बहुत अधिक बढ़ गया है और सभी लोग उससे पैदा हो रहे भयंकर दुष्परिणामों से चिन्तित हैं। अतः आधुनिक युग में तो श्रेष्ठ संगीत की और भी अधिक उपयोगिता बढ़ गई है।

संगीत मनुष्य का एक ऐसा अद्‌भुत स्वमित्र कहा गया है जो सम्पूर्ण मनोग्रन्थियों को दूर कर मन को स्वस्थ एवं निर्भार बना देता है। अतः संगीत केवल सुनना ही नहीं चाहिए, थोड़ा-बहुत गाना भी अवश्य चाहिए।

कहा गया है कि संगीत सुनकर रोता हुआ बच्चा भी चुप हो जाता है, बैलों की थकान भी उतर जाती है और विषधर सर्प भी वशीभूत हो जाता है।*

मन को एकाग्र करने में संगीत की भूमिका आश्चर्यजनक मानी गई है। अत्यधिक अशान्त एवं चंचल मन भी संगीत के माध्यम से सहज ही शान्त एवं एकाग्र हो जाता है। यही कारण है कि संगीत को आत्मानुभूति या आत्मलीनता तक का श्रेष्ठ साधन कहा गया है।

* ''शिशुर्वेत्ति पशुर्वेत्ति वेत्ति गानरसं फणी।''

हम सभी श्रेष्ठ संगीत का आलम्बन लेकर अपना सम्पूर्ण तनाव दूर करें और अपने मन को आत्मा में एकाग्र कर सच्ची आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करें– इसी पवित्र भावना से प्रस्तुत कृति सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज की पावन प्रेरणा से प्रकाशित की जा रही है। आचार्यश्री को आध्यात्मिक श्रेष्ठ संगीत की बहुत गहरी रुचि है। उन्हें सस्ता संगीत पसन्द नहीं है, इसीलिए उनकी धर्मसभाओं में दौलतराम, भूधरदास आदि के ही श्रेष्ठ आध्यात्मिक पदों की उत्तम प्रस्तुति देखी जाती है। इतना ही नहीं, उन्होंने स्वयं भी 'मिट्टी के नौमहले बैठा.....' जैसे श्रेष्ठ आध्यात्मिक पद-संगीत की रचना की है। 'संगीत-समयसार' का प्रकाशन भी इस विषय में उनकी गहरी रुचि को प्रकट करता है। प्रस्तुत कृति में उन्हीं की रुचि के ऐसे 27 भजनों का संग्रह किया गया है जो उनकी धर्मसभाओं में अक्सर गाये जाते हैं। इसका उद्देश्य यह भी है कि लोग प्रस्तुति के समय उस भजन को शुद्ध रूप से पढ़ और समझ सकें।

प्रस्तुत कृति के टंकण हेतु श्री सुरेश राजपूत, मुद्रण हेतु ऑस्क एडवर्टाईजिंग, नई दिल्ली और प्रकाशन हेतु कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट बहुत-बहुत धन्यवादार्ह है।

—डॉ. वीरसागर जैन
अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

अनुक्रमणिका

क्रमांक	भजन	पृष्ठांक
1.	अरिहंत पिताजी तेरे (लोरी)	9
2.	ध्वज-गीत (आदि ऋषभ के पुत्र भरत का)	10
3.	भरत जी घर ही में वैरागी	11
4.	जय जय श्री आदि जिन	12
5.	ओ जगत् के शांतिदाता	13
6.	तुम से लागी लगन.....	14
7.	जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र	15
8.	भजन से रख ध्यान प्राणी	16
9.	रे मन, भज-भज दीन दयाल	17
10.	मेरे चारों शरण सहाई	18
11.	जगे हैं पुण्य भव्यों के	19
12.	चरणन से जी म्हारी लागी लगन	21
13.	भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का	22
14.	दया कर दया कर दया धर्म धारी	23
15.	मिट्टी के नौमहले बैठा.....	24
16.	समयसार की अद्भुत महिमा	25
17.	धर्म बिना कोई नहीं अपना.....	26
18.	भगवन्त भजन क्यों भूला रे.....	27
19.	अमृत झरि झुरि-झुरि आवे जिनवाणी	28
20.	बाबा, मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे.....	29
21.	चरखा हुआ पुराना	30
22.	अब हम अमर भये न मरेंगे.....	31
23.	होली खेले मुनिराज अकेले वन में.....	32
24.	भगवन्त भजन क्यों भूला रे	33
25.	अज्ञानी पाप धतूरा न बोय.....	34
26.	दुःख भी मानव की सम्पत्ति है.....	35
27.	अब के ऐसी दिवाली मनाऊँ.....	36

सुभाषितेन गीतेन, बालानां च लीलया।
यस्य न द्रवते चित्तं, स मुक्तोऽथवा पशुः।।

सूक्ति-सुभाषित, गीत-संगीत और बच्चों की लीला से जिस व्यक्ति का मन द्रवित नहीं होता वह मुक्त होगा अथवा पशु।

1. अरिहंत पिताजी तेरे ¼ykjh½

अरिहन्त पिताजी तेरे, जिनवाणी माता तेरी।
मेरे भैया ! अरिहन्त सहज है होना रे।। 1।।

सिद्ध पिताजी तेरे, जिनवाणी माता तेरी।
मेरे भैया! तुम सिद्ध सहज है होना रे।। 2।।

आचार्य पिताजी तेरे, जिनवाणी माता तेरी।
मेरे भैया ! आचार्य सहज है होना रे।। 3।।

उपाध्याय पिताजी तेरे, जिनवाणी माता तेरी।
मेरे भैया ! उपाध्याय सहज है होना रे।। 4।।

मुनिराज पिताजी तेरे, जिनवाणी माता तेरी।
मेरे भैया ! मुनिराज सहज है होना रे।। 5।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 9 4/29/2009, 8:40 PM

2. ध्वज-गीत

आदि ऋषभ के पुत्र **भरत** का,
भारत देश महान।
ऋषभदेव से महावीर तक,
करें सुमंगल गान।।

पंच रंग पाँचों परमेष्ठी,
युग को दें आशीष।
विश्व शान्ति के लिए झुकाएँ,
पावन ध्वज को शीष।
'जिन' की ध्वनि जैन की संस्कृति,
अग-जग को वरदान।

***

bhajan book.pmd 10 4/29/2009, 8:40 PM

3. भरत जी घर ही में वैरागी

वे तो अन-धन सबके त्यागी।
भरत जी घर ही में वैरागी।।

कोड अठारह तुरंग हैं जाके, कोड चौरासी सागी।
लाख चौरासी गजरथ सोहैं, तो भी भए नहीं रागी।।

तीन कोड दो हलधर सोहैं, एक कोड हल साजे।
नव निधि रतन चौदह घर जाके, मन वांछा सब भागी।।

चार कोड मण नाज उठे नित, लोण लाख दश लागे।
कोड थाल कंचन मणि सोहै, नांहि भया कोई रागी।।

ज्यों जल बीच कमल अंतःपुर, नांहि भये वे रागी।
भविजन होय सोई उर धारो, सोई पुरुष बड़भागी।।

***

bhajan book.pmd 11 4/29/2009, 8:40 PM

4. श्री आदिनाथ स्तुति

जय-जय श्री आदि जिन, तुम हो तारन-तरन।
भवि जन प्यारे, इन्द्र धरणेन्द्र स्तुति धर तुम्हारे।। टेक।।

प्रभु तुम सर्वार्थसिद्धि से आये, माता मरुदेवी के सुत कहाए।
नाभि नृप के नन्दन, तुमको शत-शत वन्दन, हो हमारे।।

कर्मयुग के प्रथम तुम विधाता, लोक-हित मार्ग के आदि ज्ञाता।
अंक-अक्षर कला, तुम से प्रगटे प्रभो, शिल्प सारे।।

देख नीलांजना के निधन को, राज छोड़ा गये देव वन को।
योग साधा कठिन, कर्म बन्धन गहन, तोड़ डारे।।

सिद्ध परमात्म पद पा गये तुम, शम्भु ब्रह्मा जिनेश्वर हुए तुम।
सिर नवाते हुए, गुण-गण गाते हुए, गणधर हारे।।

नाथ अपनी चरण-भक्ति दीजै, आत्मगुण-सिन्धु में मग्न कीजै।
छीजे आवागमन, शिवपुर में हो गमन, कर्म झारे।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 12 4/29/2009, 8:40 PM

5. ओ जगत के शान्तिदाता.....

ओ जगत के शांतिदाता, शांति जिनेश्वर जय हो तेरी।। टेक।।

किसको मैं अपना कहूँ कोई नज़र आता नहीं।
इस ज़हां में आप बिन कोई भी मन भाता नहीं।
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता शान्ति जिनेश्वर।। 1।।

तेरी ज्योति से ज़हां में ज्ञान का दीपक जला।
तेरी अमृत वाणी से ही मार्ग मुक्ति का मिला।
शीश अपना मैं झुकाता शान्ति जिनेश्वर।। 2।।

मोह-माया में फँसा तुमको भी पहचाना नहीं।
ज्ञान है न ध्यान दिल में धर्म को जाना नहीं।
दो सहारा मुक्ति दाता शांति जिनेश्वर।। 3।।

बन के सेवक हम खड़े हैं स्वामी तेरे द्वार पे।
हो कृपा तेरी तो बेड़ा पार हो संसार से।
तेरे गुण स्वामी मैं गाता शान्ति जिनेश्वर।। 4।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 13 4/29/2009, 8:40 PM

6. तुम से लागी लगन

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटो मेटो जी संकट हमारा।। टेक।।

निशदिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा।।

विश्वसेन के राज दुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा।।

इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुख नहीं पावे कदा, सेवक थारा।।

जग के दुःख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग-सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जामन मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।।

लाखों बार तुम्हें शीष नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 14 4/29/2009, 8:40 PM

7. जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र

प्रेम से कहो सभी, भक्ति से सुनो सभी,
हृदय में गुनो सभी, तीर्थंकर महावीर वर्धमान जय जय।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र जय जय।।

जिनका नाम कोटि-कोटि मंगलों की खान है,
जिनका रूप दिव्य सूर्य सा प्रकाशमान है।
जिनका धर्म सत्य की उपासना का धर्म है,
जिनका ध्यान ही अखण्ड मुक्ति का विधान है।।
वीतराग, वीतद्वेष, गुणनिधान, जय जय।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र जय जय।।

इस धरा की कोख जिनके दिव्य जन्म से फली,
जिनके पुण्य कर्म से ही ज्योति धर्म की जली।
त्याग और विराग-भाव जिनमें मूर्तिमन्त थे,
शालवृक्ष के तले जो बन गये थे केवली।।
महाश्रमण त्रिशला के सुखनिधान, जय जय।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र जय जय।।

'जिन' के पंथ में पुनीत आचरण प्रधान है,
जिनकी दृष्टि ऊँच-नीच पर सदा समान है।
तप-अहिंसा-संयम ही जिनका धर्मचक्र है,
जिनका शब्द-शब्द कोटि-ग्रन्थ से महान है।।
अनेकान्त दर्शन के शुद्धज्ञान, जय जय।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र जय जय।।

✶✶✶

bhajan book.pmd 15 4/29/2009, 8:40 PM

8. भजन से रख ध्यान.....

भजन से रख ध्यान प्राणी ! भजन से रख ध्यान।। टेक।।

भजन से इन्द्रादि पद हों, चलत बैठ विमान।
भजन से हों हरी प्रतिहरि, बाहुबली बलवान।। 1।।

भजन से षट्खण्ड नवनिधि, होत भरत समान।
तिरे भवसागर तुरत ह्वै, पाप को अवसान।। 2।।

भजन से भये पूज्य मुनिजन, गौतमादि महान।
भजन से ही तिरे भील, जटायु मेंढक श्वान।। 3।।

कहत 'नयनानन्द' जग में, भजन सम न निधान।
भये भजन से अरिहन्त सिद्ध, आचार्य गए निर्वान।। 4।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 16 4/29/2009, 8:40 PM

9. रे मन ! भज-भज दीन दयाल

रे मन ! भज-भज दीन दयाल।
जाके नाम लेत इक छिन में, कटैं कोटि अघ-जाल।। टेक।।

परम ब्रह्म परमेश्वर स्वामी, देखैं होत निहाल।
सुमरन करत परम सुख पावत, सेवत भाजै काल।। 1।।

इन्द्र फनिन्द्र चक्रधर गावैं, जाको नाम रसाल।
जाको नाम ज्ञान परकासै, नाशे मिथ्या जाल।। 2।।

जाके नाम समान नहीं कछु, ऊरध मध्य पताल।
सोई नाम जपो नित 'द्यानत', छाँड़ि विषय विकराल।। 3।।

***

bhajan book.pmd 17 4/29/2009, 8:40 PM

10. मेरे चारौं शरण सहाई

मेरे चारों शरण सहाई।।

जैसे जलधि परत बायस को,
बोहित एक उपाई।। मेरे चारों....

प्रथम शरण अरिहन्त चरण की,
सुर नर पूजत पाँई।। मेरे चारों...

दुतिय शरण श्री सिद्धन केरी,
लोक तिलकपुरी आई।। मेरे चारों...

तीजे शरण सर्व साधुनि की,
नगन दिगम्बर काई।। मेरे चारों...

चौथे धर्म अहिंसा रूपी,
सुरग मुक्ति सुखदाई।। मेरे चारों...

दुर्गति परत सुजन परिजन पै,
जीव न राख्यो जाई।। मेरे चारों....

'भूधर' सत्य भरोसो इनको,
येहि लेहि बचाई।। मेरे चारों...

✳✳✳

bhajan book.pmd 18 4/29/2009, 8:40 PM

11. जगे हैं पुण्य भव्यों के ¼fnxEcj efu Lrfr½

जगे हैं पुण्य भव्यों के, दिगम्बर देव आये हैं।
जगत् में मोक्ष का साकार, शुभ संदेश लाये हैं।। टेक।।

उठो भव्यो, चलो पुण्यात्मवानो, भक्ति भावें हम।
रहे चिरकाल से सोये समय-सुख को जगायें हम।
मिले उपयोग के शुभ क्षण, खिले हैं पुष्प नंदन के।
चरण स्पर्श कर लोहा, लहेगा रूप कुंदन के।
कमल रचना कुशल पावन चरण गुरु ने बढ़ाये हैं।। 1।।

स्वयं कचलौंच करते हैं, अचेलक रूप के धारी।
महाव्रत पंच पालक हैं, जगत् के परम उपकारी।
कमल निर्लेप रहते हैं, निरंतर आत्मचिंतन में।
कुबेरों का विभव अर्पित, हुआ है शिव अकिंचन में।
स्वहित मन्दिर शिखर पर, मणि कलश मानो उठाये हैं।। 2।।

हृदयगृह में त्रिरत्नों के, अकम्पित दीप जलते हैं।
समितियाँ साथ रहती हैं, जहाँ मुनिराज चलते हैं।
कमंडलु-पिच्छि शोभित हैं, उपकरण शौच संयम के।
प्रदाता ज्ञान के सम्यक्, निवारक हैं अखिल भ्रम के।
परम चिन्मय अभीक्षण-ज्ञान-सागर में नहाये हैं।। 3।।

चरण-वाहन धरा-शैय्या, नियत आहार अंजलि में।
जहाँ विश्राम वह ही देश, समता भवन तरुतल में।
निरंतर निर्जरा से नष्ट करते, कर्म कल्मष को।
अविद्या से पृथक् हो पालते, विद्या विमल व्रत को।
वचन पीयूष पर तिरते हुए, ज्यों हंस आये हैं।। 4।।

bhajan book.pmd 19 4/29/2009, 8:40 PM

नमो गुरुवर, नमो मुनिवर, नमो निर्ग्रन्थ तपधारी।
नमो भव्यात्मपद्मों के विकासिन सूर्य तनुधारी।
लिये श्रद्धासुमन मन में, त्रियोगी भक्ति पाने को।
उपस्थित हैं चरण में हम शुभाशीर्वाद पाने को।
सकल मंगल अमरतरु-सी, वरद गुरु की भुजाएँ हैं।। 5।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 20 4/29/2009, 8:40 PM

12. चरणन से जी म्हारी लागी लगन

चरणन से जी म्हारी लागी लगन,
लागी-लागी लगन।।

हाथ कमण्डलु, कर में पीछी,
मिले गुरु निस्तारन-तरन।
वन में बसे, कसे इन्द्रियन को,
धारें करुणा रूप नगन।।

हित-मित वचन, धरम उपदेशें,
मानो बरसत मेघ झरन।
'नयनानंद' नमत है तिनको,
जो निज आतम ध्यान मगन।।

***

bhajan book.pmd 21 4/29/2009, 8:40 PM

13. भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का

¼d0oky h½

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का।
मज़ा कहा नहीं जाए इस कंगाली का।।

बच्चा हो या बच्ची, उसे निंदिया आए अच्छी।
पास न होवे लंगोटी, उसे चिन्ता हो फिर किसकी?
न भय रखवाली का।। 1।।

छोड़े जो परिवारा, नहीं हो ममता उसे धन की।
तजे परिग्रह सारा, फिर चाह मिटे सब मन की।
न भय घरवाली का।। 2।।

धन्य दिगम्बर साधु, जो नग्न अवस्था रहते।
खड़े-खड़े इक बारा, अँजुलि में भोजन करते।
काम क्या थाली का।। 3।।

तज के सारी दुविधा, जो निज आतम को ध्यावें।
धन्य जन्म है उनका, वो शिव आनंद को पावें।
मुक्त पुर वाली का।। 4।।

***

bhajan book.pmd 22 4/29/2009, 8:40 PM

14. समयसार भावना

दया कर, दया कर, दयाधर्म धारी।
हम आये हुए हैं, शरण में तुम्हारी।। टेक।।

नहीं हमने अपना समयसार जाना,
सदा परपदार्थों में अपनत्व माना।
उन्हें याद करते रहे रात-दिन हम,
जिन्हें सर्वदा के लिए था भुलाना।
अहो ! मूल में ही रही भूल भारी।। हम आये.।।

प्रभो ! कर्म मेरे घिरे आस्रवों से,
रही प्रीति मेरी सदा अध्रुवों से।
मिलेगा उन्हें देव ! निस्तार कैसे,
बहे लोकसागर में टूटे प्लवों से।।
सँभालो खिवैया ! यह नैया हमारी।। हम आये.।।

सुलभ हो मुझे भेदविज्ञान अपना,
पृथक् पुद्गलों से 'समय' का परखना।
करूँ आत्मचिन्तन, तरूँ जन्म-सागर,
वरूँ मोक्षलक्ष्मी को निर्वाण पाकर।।
कृपा नाथ ! तुम-सा बनूँ सिद्धिधारी।। हम आये.।।

सुना देव ! तारन-तरन नाम तेरा,
इसी से लिया है चरण में बसेरा।
तुम्हीं सुप्रभातम् तुम्हीं हो सवेरा,
तुम्हीं ने प्रभो ! कर्म पथ को निवेरा।।
कहाँ तक कहें नाथ ! महिमा तुम्हारी।। हम आये.।।

bhajan book.pmd 23 4/29/2009, 8:40 PM

15. हंस-दीप

मिट्टी के नौमहले बैठा हंस ज्योति फैलाये।
'हं-सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं' का अमृत नाद सुनाये।।

तिमिर कहाँ मैं भी तो देखूँ दीपक जलता जाए।
प्रकाश का प्रहरी घर-आँगन घूमे अलख जगाए।। टेक।।

तिल-तिल जलता तैल, तूल पर मोर मचलते आते।
कर्मबंध के अनादि कश्मल, अपना रूप दिखाते।
दे अंचल की ओट अचंचल कौन करे भंगुर को।
कौन रोक लेगा शराव से उड़ते हंसावर को।
तैल-तूल का ठाठ अकिंचन सपनों में भरमाये।
'हं-सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं' का अमृत नाद सुनाये।। 1।।

यह विभावरी, इन्दु-विभा पर लगा आवरण तम का।
आज कसौटी पर है विक्रम कनक-दीप लघुतम का।
तत्पर होकर प्राण अड़े हैं दुर्जय समर-स्थल में।
नहा उठे हैं वीर-केसरी आभा की हिंगुल में।
सारी रात रतजगा कोई आज न हमें बुझाये।
'हं-सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं' का अमृत नाद सुनाये।। 2।।

अंजन-कूट टूटते जाते, एक-एक चितवन पर।
गौरी के दुर्ललित लास्य, साकार हुए कंपन पर।
आज चुनौती अंध-दनुज की शल्य-शलाकाओं को।
आमंत्रण भेजा लघु-लघु दीपों ने राकाओं को।
तिमिर-कृष्ण के संग सलोनी राधा रास रचाये।
'हं-सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं' का अमृत नाद सुनाये।। 3।।

bhajan book.pmd 24 4/29/2009, 8:40 PM

16. समयसार की अद्भुत महिमा

समयसार की अद्भुत महिमा, आज बताऊँ भली-भली।
सुन लो सच्चे सुख के वांछक, धूम मचाऊँ गली-गली।।

समयसार ही तीन लोक में, परम तत्त्व बतलाता है।
सुखी हुये वे ही जब जिनने, समयसार को ध्याया है।
समयसार बिन दुख न मिटेगा, बात बताऊँ खरी-खरी।।
सुन लो सच्चे सुख के वांछक, धूम मचाऊँ गली-गली।। 1।।

सर्व छन्द साहित्य पढ़े अरु, बहु आगम अभ्यास किया।
पंडित भी कहलाये पर नहीं, समयसार का ज्ञान किया।
समयसार के ज्ञान बिना तुम, घूमे भैया गली-गली।।
सुन लो सच्चे सुख के वांछक, धूम मचाऊँ गली-गली।। 2।।

तन-कर्मों से न्यारा जाना, रागादि में अटक गया।
रागादि भी भिन्न कहे, पर्याय-भेद में भटक गया।
समयसार में भेदों से भी, भिन्न आत्मा शुद्ध कही।।
सुन लो सच्चे सुख के वांछक, धूम मचाऊँ गली-गली।। 3।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 25 4/29/2009, 8:40 PM

17. धर्म बिना कोई नहीं अपना...

धर्म बिना कोई नहीं अपना, कोई नहीं अपना।
सुख सम्पति धन थिर नहीं जग में, जैसे रैन सपना।।

आगे किया सो पाया भाई, या ही है निरना।
अब जो करेगा सो पावेगा, तातें धर्म करना।।

ऐसे सब संसार कहत है, धर्म किये तिरना।
पर पीड़ा व्यसनादिक सेवैं, नरक विषै परना।।

नृप के घर सारी सामग्री, ताके ज्वर तपना।
अरु दरिद्री के हू ज्वर है, पाप उदय थपना।।

नाती तो स्वारथ के साथी, तोही विपति भरना।
वन गिरि सरिता अग्नि युद्ध में, धर्म ही का सरना।।

चित 'बुधजन' संतोष धारना, पर चिंता हरना।
विपति परै तो समता रखना, परमातम जपना।।

✶✶✶

bhajan book.pmd 26 4/29/2009, 8:40 PM

18. भगवन्त भजन क्यों भूला रे?

भगवन्त भजन क्यों भूला रे?
ये संसार रैन का सपना, तन-धन वारि-बबूला रे।।

इस जोबन का कौन भरोसा, पावक में तृण पूला रे।
काल कुठार लिये सिर ठाड़ा, क्या समझे मन फूला रे।।

स्वारथ साधै पाँव-पाँव तू, परमारथ को लूला रे।
कहु कैसे सुख पावे प्राणी, काम करै दुःख मूला रे।।

मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निज कर कन्ध वसूला रे।
भज श्री राजमती-वर 'भूधर', दो दुरमति सिर धूला रे।।

***

bhajan book.pmd 27 4/29/2009, 8:40 PM

19. अमृत झरि झुरि-झुरि आवे जिनवाणी

अमृत झरि झुरि-झुरि आवे जिनवाणी।
द्वादशांग बादल ह्वै उमड़े, ज्ञान अमृत रस खानी।।

स्याद्वाद बिजुरी अति चमके, शुभ पदार्थ प्रगटानी।
दिव्य ध्वनि गंभीर गरजहै, श्रवण सुनत सुखदानी।।

भव्यजीव-मन भूमि मनोहर, पाप कूड़ कर हानी।
धर्म बीज तहाँ ऊगत नीको, मुक्ति महा फल ठानी।।

ऐसो अमृत झर अति शीतल, मिथ्या तपत बुझानी।
'बुध महाचन्द्र' इसी झर भीतर, मग्न सफल सो ही ज्ञानी।।

***

bhajan book.pmd 28 4/29/2009, 8:40 PM

20. बाबा मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे

बाबा ! मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे।
सुर नर नारक तिर्यक् गति में, मोको करमन घेरा रे।।

मात-पिता सुत-तिय कुल परिजन, मोह गहन उरझेरा रे।
तन धन वसन भवन जड़ न्यारे, हूँ चिन्मूरति न्यारा रे।।

मुझ विभाव जड़ कर्म रचत है, करमन हमको फेरा रे।
विभाव चक्र तजि धारि सुभावा, निज आनन्दघन हेरा रे।।

खरच खेद नहिं अनुभव करते, निरख चिदानन्द तेरा रे।
जप तप व्रत श्रुत सार यही है, 'बुधजन' कर न अबेरा रे।।

✶✶✶

bhajan book.pmd 29 4/29/2009, 8:40 PM

21. चरखा हुआ पुराना

चरखा चलता नाहि, चरखा हुआ पुराना।। टेक।।

पग खूँटे दो हालन लागे, उर मदरा खखराना।
छीदी हुई पाँखुड़ी पांसू, फिरै नांहि मनमाना।।
चरखा चलता नाहि...

रसना-तकली ने बल खाया, सो अब कैसे खूँटे।
शब्द-सूत सूधा नहीं निकले, घड़ि-घड़ि पल-पल टूटै।।
चरखा चलता नाहि...

आयु-माल का नाहि भरोसा, अंग चला चल सारे।
रोज इलाज मरम्मत चाहै, वैद बाढ़ही हारै।।
चरखा चलता नाहि...

नया चरखला रंगा चंगा, सब का चित्त चुरावै।
पलटा वरन गये गुन अगले, अब देखैं नहिं भावै।।
चरखा चलता नाहि...

मोटा महीं कात कर भाई, कर अपना सुरझेरा।
अन्त आग में ईंधन होगा, 'भूधर' समझ सवेरा।।
चरखा चलता नाहि...

✶✶✶

bhajan book.pmd 30 4/29/2009, 8:40 PM

22. अब हम अमर भये.....

अब हम अमर भये न मरेंगे।
तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरेंगे।। टेक।।

उपजै मरै काल तें प्रानी, तातैं काल हरेंगे।
राग दोष जग बन्ध करत हैं, इनको नाश करेंगे।। 1।।

देह विनाशी मैं अविनाशी, भेदज्ञान पकरेंगे।
नासी जासी हम थिर वासी, चोखे हो निखरेंगे।। 2।।

मरे अनंत बार बिन समझे, अब सब दुख बिसरेंगे।
'द्यानत' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरे सुमरेंगे।। 3।।

***

bhajan book.pmd 31 4/29/2009, 8:40 PM

23. होली खेले मुनिराज अकेले वन में

होली खेले मुनिराज अकेले वन में, खड़े वन में।। टेक।।

काहे की प्रभुजी होली बनाई, काहे की आग लगाई वन में।
कर्म काठ की होली बनाई, तप की आग लगाई वन में।।

काहे का कीच काहे का गारा, काहे की धूल उड़ाई वन में।
ज्ञान का कीच चरित का गारा, कर्मों की धूल उड़ाई वन में।।

काहे का गुलाल काहे की पिचकारी, काहे को रंग भरो वन में।
ज्ञान गुलाल चरित पिचकारी, दर्शन को रंग बनाया वन में।।

ऐसी होरी जो कोई खेले, पाप कटे उनके छिन में।
ऐसी होरी खेले मुनिराज, फिर नहिं आवे भव-वन में।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 32 4/29/2009, 8:40 PM

24. भगवन्त भजन क्यों भूला रे

भगवन्त भजन क्यों भूला रे।। टेक।।
यह संसार रैन का सुपना, तन धन वारि बबूला रे।।

इस जीवन का कौन भरोसा, पावक में तृण-पूला रे।
काल कुदार लिये सिर ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे।।1।।

स्वारथ साधै पाँव पाँव तू, परमारथ को लूला रे।
कहु कैसे सुख पैहै प्राणी, काम करै दुखमूला रे।।2।।

मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निज कर कंध वसूला रे।
भज श्री राजमती-वर 'भूधर', दो दुर्मति सिर धूला रे।।3।।

***

bhajan book.pmd 33 4/29/2009, 8:40 PM

25. अज्ञानी पाप धतूरा न बोय

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय।। टेक।।
फल चाखन की बार भरै दृग, मरि है मूरख रोय।।

किंचित् विषयनि सुख के कारण, दुर्लभ देह न खोय।
ऐसा अवसर फिर न मिलैगा, इस नींदड़ी न सोय।। 1।।
अज्ञानी..... ।।

इस विरियां मैं धर्म-कल्प-तरु, सींचत स्याने लोय।
तू विष बोवन लागत तो सम, और अभागा कोय।। 2।।
अज्ञानी..... ।।

जे जग में दुखदायक बेरस, इस ही के फल सोय।
यों मन 'भूधर' जानिकै भाई, फिर क्यों भोंदू होय।। 3।।
अज्ञानी..... ।।

✳✳✳

bhajan book.pmd 34 4/29/2009, 8:40 PM

26. दुःख भी मानव की सम्पति है

दुःख भी मानव की सम्पत्ति है, तू क्यों दुःख से घबराता है।। टेक।।

दुःख आया है तो जायेगा, सुख आया है तो जायेगा।
दुःख जायेगा तो सुख देकर, सुख जायेगा तो दुःख देकर।
सुख देकर जाने वाले से रे मानव ! क्यों भय खाता है।।
दुःख भी.....।।

सुख में हैं व्यसन प्रमाद भरे, दुःख में पुरुषार्थ चमकता है।
दुःख की ज्वाला में पड़ कर ही, कुन्दन सा तेज दमकता है।
सुख में सब भूले रहते हैं, दुःख सब को याद दिलाता है।।
दुःख भी.....।।

सुख संध्या का वह लाल क्षितिज, जिसके पश्चात् अँधेरा है।
दुःख प्रातः का झुटपुटा समय, जिसके पश्चात् सवेरा है।
दुःख का अभ्यासी मानव ही, सुख पर अधिकार जमाता है।।
दुःख भी.....।।

दुःख के सम्मुख जो सिहर उठे, उनको इतिहास न जान सका।
जो दुःख में कर्मठ, धीर रहे, उनको ही जग पहचान सका।
दुःख एक कसौटी है जिस पर, मानव ही परखा जाता है।।
दुःख भी.....।।

✶✶✶

bhajan book.pmd 35 4/29/2009, 8:40 PM

27. आध्यात्मिक शुभ दीपावली

अब के ऐसी दिवाली मनाऊँ, कबहुँ फेर न दुखड़ा पाऊँ।

आन कुदेव कुरीति छाँड़कै, श्री महावीर चितारूँ।।
राग-द्वेष का मैल जलाकर, उज्ज्वल ज्योति जगाऊँ।
अपनी मुक्ति-तिया हरषाऊँ..... ।। अब के।।

निज अनुभूति महालक्ष्मी का, वास हृदय करवाऊँ।
निज गुण-लाभ दोष-टोटे का, लेखा ठीक लगाऊँ।।
जासौं फेर न टोटा पाऊँ..... ।। अब के।।

ज्ञानरतन के दीप में तप का, तेल पवित्र भराऊँ।
अनुभव-ज्योति जगा के मिथ्या, अंधकार विनसाऊँ।।
जासौं शिव की गैल निहारूँ..... ।। अब के।।

अष्टकरम का फोड़ फटाखा, विजयी जिन कहलाऊँ।
शुद्ध-बुद्ध सुखकन्द मनोहर, शीलस्वभाव लखाऊँ।।
जासों शिवगौरी विलसाऊँ..... ।। अब के।।

✶✶✶

bhajan book.pmd 36 4/29/2009, 8:40 PM